क्या पक्षी गाने का रियाज़ करते हैं?

युरोप के कई पक्षी प्रवास करके जाड़ा अफ्रीका में बिताते हैं जब युरोप में बहुत ठंड होती है। आम तौर पर माना जाता है कि युरोप में जाड़ों में भोजन की कमी के चलते ये पक्षी दक्षिण की ओर प्रवास कर जाते हैं जहां पर्याप्त भोजन मिल जाता है। मगर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की मार्जोरी सोरेंसन का मत है कि मामला सिर्फ भोजन तक सीमित नहीं है।

यह देखा गया है कि ये प्रवासी पक्षी अफ्रीका पहुंचकर खूब गाते हैं। यह थोड़ा उलझन में डालने वाला व्यवहार है। आम तौर पर पक्षी गीत गाते हैं ताकि प्रणय साथी को आकर्षित कर सकें। अफ्रीका में तो ये पक्षी प्रजनन करते नहीं। फिर वहां बैठकर गाने का क्या फायदा? गाना गाने में तो ऊर्जा और समय खर्च होंगे, जिनका उपयोग भोजन की तलाश में किया जा सकता था। फिर ये गाते क्यों हैं?

इस सम्बंध में तीन परिकल्पनाएं रही हैं। एक तो हो सकता है कि अफ्रीका के जंगलों में वे अपने इलाके की रक्षा के लिए गाते हैं। दूसरा विचार यह था कि हो सकता है कि वे सिर्फ इसलिए गाते हों कि उनका टेस्टोस्टेरोन स्तर बढ़ जाता है हालांकि गाने का कोई फायदा न हो। तीसरा कारण यह भी सोचा गया कि शायद वे युरोप लौटकर साथी को आकर्षित करने के लिए गाना गाने का रियाज़ अफ्रीका में करते हों। कई पक्षियों के गीत बहुत पेचीदा होते हैं, इसलिए रियाज़ वाली बात में भी कुछ दम तो है।

सोरेंसन की टीम ने अफ्रीका जाकर जांच करने की ठान ली। उन्होंने ग्रेट रीड वार्बलर नामक पक्षी पर ध्यान केंद्रित किया। इनका गीत काफी पेचीदा होता है। टीम ने पाया कि अफ्रीका में ग्रेट रीड वार्बलर के इलाके एक-दूसरे के इलाकों में फैले होते हैं और कोई दूसरा पक्षी उनके इलाके में आए तो वे ज़्यादा आक्रामक व्यवहार नहीं दर्शाते। यानी इलाके की रक्षा करने के लिए गीत गाने की बात सही नहीं हो सकती।

यह भी पाया गया कि जाड़ों में अफ्रीका जाने वाले पक्षियों के गाने और उनके टेस्टोस्टेरोन स्तर का कोई सम्बंध नहीं है। तो एक ही परिकल्पना बच गई कि शायद ये पक्षी अफ्रीका में गाने का रियाज़ करते हैं।

जब पक्षियों की 57 प्रजातियों की तुलना की गई तो पता चला कि अफ्रीका में सबसे ज़्यादा वही पक्षी गाते हैं, जिनके गीत जटिल होते हैं। यह भी देखा गया कि जिन पक्षियों के पंख आकर्षक होते हैं वे अफ्रीका प्रवास के दौरान ज़्यादा नहीं गाते। मगर जिनके पंख फीके रंग के होते हैं उनमें गाने की प्रवृत्ति ज़्यादा होती है। इस सबके आधार पर सोरेंसन के दल ने *दी अमेरिकन नेचुरेलिस्ट* शोध पत्रिका में मत व्यक्त किया है कि ये पक्षी अफ्रीका पड़ाव के दौरान न सिर्फ गाने का रियाज़ करते हैं बल्कि अपने गीतों में नए सुरों को जोड़ते हैं जिन्हें वे अगले प्रजनन काल में गाएंगे।

इस मामले में अन्य वैज्ञानिकों का कहना है कि अभी इसके पक्ष में कोई पुख्ता प्रमाण नहीं है मगर यह एक विचारणीय प्रस्ताव है। ***(स्रोत फीचर्स)***

2015 के स्रोत सजिल्द का ऑर्डर करें

मूल्य 200 रुपए (25 रुपए डाक खर्च)